चुनींदा शेर और ग़ज़लें

कुलदीप सलिल

सम्पादन

हरेराम समीप

कुलदीप सलिल

जन्म : 30 दिसम्बर, 1938, सियालकोट (पाकिस्तान)

कुलदीप सलिल का पहला कविता संग्रह 'बीस साल का सफर' 1979 में प्रकाशित हुआ था। कवि-समीक्षक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, जो उन दिनों सारिका के सम्पादक थे, अपनी वार्षिक समीक्षा में इसकी गणना वर्ष की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकों में की। यह संग्रह काफी चर्चित रहा। कुलदीप सलिल की दूसरी काव्य पुस्तक 'हवस के शहर में' जो कि एक ग़ज़ल संग्रह है, 1987 में सामने आया। पुस्तकाकार होने से पहले इस पूरे संग्रह को 'दीर्घा' पत्रिका में डॉ. विनय ने अपने एक विशेषांक में प्रकाशित किया। दिल्ली हिन्दी अकादमी ने 'साहित्यिक कृति पुरस्कार' के अन्तर्गत इस संग्रह को सम्मानित किया। 'हवस के शहर में' से एक ग़ज़लकार के रूप में कुलदीप सलिल की पहचान बन गई। इनकी तीसरी पुस्तक 'जो कह न सके' सन् 2000 में प्रकाशित हुई। और 2004 में 'आवाज का रिश्ता' शीर्षक से तीसरा ग़ज़ल संग्रह वाणी प्रकाशन से सामने आया। 2005 में 20 अंग्रेजी कवियों का हिन्दी काव्यानुवाद 'अंग्रेजी के श्रेष्ठ कवि और उनकी श्रेष्ठ कवितायें' के नाम से छपा। सन् 2011 में आपका पाँचवा कविता संग्रह 'धूप के साये में' और 2015 में 'आग से गुजर कर' (कवितायें और ग़ज़लें) हिंद पाकेट बुक्स ने प्रकाशित किया। नोबेल पुरस्कार प्राप्त बॉब डिलेन की कविताओं और गीतों का आपके द्वारा किया गया अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशनाधीन है। आपकी कुल 8 काव्य पुस्तकें आ चुकी हैं, जिसमें से एक काव्य संग्रह 'दी पल्स ऑफ आवर टाईम्स' अंग्रेजी में है ।

हिन्दी के अलावा, अनेक पत्र-पत्रिकाओं में इनकी अंग्रेजी कवितायें हिन्दी काव्यानुवाद सहित नियमित रूप से कई वर्षों से प्रकाशित हो रही हैं। कुलदीप सलिल के गालिब, फैज़, इकबाल, अहमद फराज़, मीर तकी मीर, साहिर लुधियानवी तथा अन्य उर्दू कवियों की कविताओं के अंग्रेजी काव्यानुवाद भी सामने आये हैं। आपके अनुवाद कार्य के लिये इन्हें साहित्य अकादमी और डी.ए.वी. लिट्रेरी अवार्ड कमेटी ने भी पुरस्कृत किया। हाल ही में फिराक गोरखपुरी की चुनी हुई ग़ज़लों और रूबाईयों का अनुवाद तथा मजाज लखनवी की शायरी का अनुवाद भी हिंद पाकेट बुक्स और राजपाल एंड संस से क्रमशः प्रकाशित हुआ है। पिछले दिनों आपका हिंदी के नये-पुराने 65 कवियों की हिंदी की श्रेष्ठ व चुनी हुई कविताओं का अंग्रेजी काव्यानुवाद (प्रथम खंड) "Gems of Hindi Poetry" प्रसिद्ध प्रकाशक सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। कुलदीप सलिल ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और अंग्रेजी में एम.ए. किया। वे दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कालेज से अंग्रेजी विभाग से एसोसिएट प्रोफेसर के पद से सेवामुक्त हुए हैं। यह उल्लेखनीय है कि हिंदुस्तान टाईम्स में विख्यात लेखक श्री खुशवंत सिंह ने उनके अनुवाद के बारे में अपने समाचारपत्र में लिखा कि कोई हिंदुस्तानी, पाकिस्तानी या फिरंगी लेखक इतना अच्छा अनुवाद नहीं कर सकता जैसा कि श्री कुलदीप सलिल जी ने किया।

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस
नई दिल्ली
फ़ोन : 99682-88050, 82879-88726
ISBN 978-81-970121-8-1
₹ 200.00

चुनींदा शेर और ग़ज़लें

कुलदीप सलिल

चुनींदा शेर और ग़ज़लें

कुलदीप सलिल

सम्पादन

हरेराम समीप

सम्पादन सहयोग

ओम सपरा

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

प्रो. कुलदीप सलिल
संपर्क : 1770, औट्म लाईन, जी.टी.बी नगर, दिल्ली-110009
फोन : 98100-52245
ई-मेल : poetkuldipsalil@gmail.com

लिटिल बर्ड पब्लिकेशंस

I.S.B.N # 978-81-970121-8-1
4637/20, शॉप नं.-एफ-5, प्रथम तल, हरि सदन,
अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मो.: 9968288050, 9911866239
ई-मेल: littlebirdinfo21@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2024
© कुलदीप सलिल

आवरण चित्र : ककसाड़ टीम
मुद्रक : बालाजी प्रिंटर्स, दिल्ली

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए लेखक/प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

ओम सपरा को,
जो एक अच्छे इन्सान हैं और
मेरे अज़ीज दोस्त है...

कुलदीप सलिल के शेर : उर्दू ग़ज़ल और हिन्दी कविता का अनूठा सम्मेल हैं

–हरेराम समीप

कुलदीप सलिल हिन्दी के वरिष्ठ ग़ज़लकार हैं और शमशेर, रामदरश मिश्र और दुष्यंत के समकालीन माने जाते हैं। विशेष बात यह है कि उन्होंने हिंदी-उर्दू ग़ज़ल की समीपता के उद्देश्य से न केवल हिन्दी में ग़ज़लें लिखीं बल्कि महान उर्दू शायरों जैसे—गालिब, मीर, फिराक, फैज आदि की ग़ज़लों के हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद का उल्लेखनीय काम किया है। यह उल्लेखनीय है कि उन्हें साहित्य अकादमी का 'अनुवाद पुरस्कार' प्रदान किया गया है।

प्रो. कुलदीप सलिल का जन्म 30 दिसम्बर 1938 को स्यालकोट (जो अब पाकिस्तान में है) में हुआ। भारत विभाजन के कारण विस्थापित होकर पहले वे दिल्ली के पास पलवल में रहे फिर दिल्ली में रहकर अंग्रेजी तथा अर्थशास्त्र विषयों में एम.ए. करके वहीं हंसराज कालेज में प्रोफेसर के पद पर कार्य करते हुए सेवानिवृत हुए। कुलदीप सलिल की सृजन यात्रा पिछले पचास वर्षों में फैली हुई है। इस यात्रा में उनका पहला कविता संग्रह सन 1979 में 'बीस साल का सफर' नाम से आया, तभी वे ग़ज़ल-लेखन की ओर मुड़ गए और अब तक ग़ज़ल में ही रमे हैं। उनके अब तक चार ग़ज़ल संग्रह—'हवस के शहर में', 'जो कह न सके', 'आवाज का रिश्ता' और 'धूप के साए में' प्रकाशित हुए हैं। उन्हें ग़ज़ल संग्रह 'हवस के शहर में' के लिए दिल्ली हिन्दी अकादमी द्वारा 'कृति पुरस्कार' भी मिला है। इसके अलावा उन्हें अनेक पुरस्कार मिले हैं।

प्रसिद्ध साहित्यकार विष्णु प्रभाकर ने लिखा है "सलिल साहब ग़ज़ल लिखना जानते हैं। हमें आशा है कि एक दिन ग़ज़ल की दुनिया में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा, क्योंकि उनके कहने में सादगी और सलीके के साथ ग़ज़ल की गहराई भी है।"

ग़ज़ल समीक्षक नीरज गोस्वामी ने अपने लेख में लिखा है, इस किताब की ग़ज़लें इतनी सरल हैं कि पढ़ने वाला कब इन्हें गुनगुनाने लगता है, पता ही नहीं चलता। बेहद सादा जबान इसकी सबसे बड़ी खासियत है। ये कमाल कोई अनुभवी ही कर सकता है और सलिल साहब के पास लगता है अनुभव का खजाना है। इसीलिए उनकी कही बात पढ़ने वालों को अपनी ही लगती है। उन की शायरी सागरो-मीना,गुलो-बुलबुल, आशिको-माशूक से आगे की शायरी है।

प्रोफेसर सादिक ने लिखा है, "कुलदीप सलिल मेरे नजदीकी हिन्दी के एक अहम ग़ज़लगो हैं। उनका कविता संग्रह 1979 में प्रकाशित हुआ था। इस हिसाब से उनका शुमार शमशेर बहादुर सिंह, बलबीर सिंह रंग, बालस्वरूप राही और दुष्यंत के साथ हिन्दी ग़ज़ल के आवंगार्द कवियों में होना चाहिए। 1987 में जब डॉ. विनय ने 'दीर्घा' पत्रिका में उनकी पचास ग़ज़लें एक साथ प्रकाशित की थीं, जो कुलदीप सलिल की शायराना सलाहियतों का बेहतरीन इजहार है। इन ग़ज़लों को पढ़ कर शमशेर बहादुर सिंह ने उन्हें एक जेन्युन कवि कहा था और उनसे बहुत सी अपेक्षाएं करते हुए लिखा था कि "जहाँ तक ग़ज़ल का सवाल है कुलदीप सलिल इसमें माहिर हैं। ग़ज़ल एक मिजाज है और यह मिजाज उनके पास है।" उनका सम्बन्ध स्यालकोट से है, जो इकबाल और फैज का जन्म-स्थल है। मैंने उनकी ग़ज़लों में भाषा की सरलता, तरलता, विचारों में सहजता, गंभीरता और शैली में दिलकशी पाई है। यही उनकी ग़ज़लों की पहचान है। मैंने सलिल के अनगिनत शेर पढ़े सुने हैं और इसी बुनियाद पर उन्हें हिन्दी ग़ज़ल की दूसरी धारा का एक कवि तस्लीम करता हूँ।

उनके अभिन्न मित्र कवि संपादक श्री ओम सपरा ने लिखा है "कुलदीप सलिल की ग़ज़लों में आजादी के बाद देश में बढ़ते हुए आर्थिक संकट और राजनीतिक अस्थिरता के बीच पिसते हुए मध्यवर्ग की पीड़ा और छटपटाहट उभारने की कोशिश की गई है, ताकि एक ही तरह की पीड़ा से जुड़े हुए लोगों को एहसास के एक समान धरातल पर लाकर उनके बीच अन्तरंग सहानुभूति का रिश्ता कायम किया जा सके। कुलदीप सलिल के साथ सुखद बात यही है कि वे प्रेम, करुणा और व्यंग के कवि भी हैं और वो ग़ज़लों में व्यक्त मानवीय पीड़ा और दुःख के निदान के लिए अपने से बृहत्तर संदर्भ के साथ जुड़कर संगठित प्रयास के महत्व को शिद्दत से सामने रखते हैं।"

वरिष्ठ आलोचक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का कहना है कि "इन ग़ज़लों में व्यक्तिगत दुःख-दर्द से ऊपर उठ कर अन्य सामाजिकों की पीड़ा को वाणी दी गई है। ये शोषण के विरोध में प्रबल स्वर उठाती ग़ज़लें हैं। प्रकृति सम्बन्धी कवितायें

बेहद चुस्त और प्रभवित करने वाली हैं। इनकी भाषा और प्रतीक अनेकार्थी बहुआयामी हैं और इनमें भाव और भाषा कि अद्‌भुत ताजगी है।"

स्वयं कुलदीप सलिल ने ग़ज़ल को लेकर बहुत महत्वपूर्ण बातें कही हैं, ग़ज़ल लिखना शायद सबसे आसान और सबसे मुश्किल काम है। आसान इसलिए कि यदि कवि केवल काफिया पैमाई करता है और मुश्किल इसलिए, यदि वह शेर में कोई बात पैदा करना चाहता है। यदि वह चाहता है कि शे'र व्यक्ति और समाज, जीवन और जगत के किसी अनचीन्हे पहलू को उजागर करे या कुछ नया न भी हो तो बात ऐसे कहे कि नई सी लगे। क्योंकि नई बातें दुनिया में बहुत कम हैं, इसलिए ग़ज़ल में कहने के ढंग के नयेपन, उसकी ताजगी और कवि के अंदाजे-बयां का विशेष महत्व है। विषय कुछ भी हो शेर ढला हुआ होना चाहिए ...आज की अच्छी ग़ज़ल की बुनियादी शर्त यह है कि उसमें तगज्जुल भी हो और वह आज के यथार्थ को दर्शाए भी, शेर दिल को छुए और दिमाग को झकझोरे भी, सोचने पर मजबूर भी करे। हर शेर में कुछ कहने योग्य होना चाहिए और बात इस तरह से कही जाए कि ताजगी महसूस हो यथार्थ की कोई परत खुले। और 'प्लेजर ऑफ डिस्कवरी' का आभास हो। गंभीर से गंभीर विचार दिल के रस्ते दिमाग तक पहुँचे। कविता पाठक को मुक्त भी करे और बाँधे भी, यथार्थ की संश्लिष्ट्ता भी हो और शेर का लुत्फ भी। परन्तु संश्लिष्ट विचार पाठक तक पहुँचना जरूर चाहिए। सम्प्रेषण का यह काम रवायती ग़ज़ल बखूबी करती है। अतः ग़ज़ल में रवायती कविता के शिल्प और आज की कविता के गंभीर पक्ष का फ्यूजन यानी विलय अपेक्षित है।"

तात्पर्य यह है कि कहन और भाषा का मुहावरा दो ऐसे बुनियादी तत्व हैं, जिनसे ग़ज़ल असर पैदा करती है और पाठक की स्मृति में जगह बनाती है। इस मामले में सलिल की ग़ज़लें सफल हुई हैं। यहाँ प्रस्तुत उनके शेर उनकी सतत ग़ज़ल-लेखन की उर्जा और व्यापक काव्य-चेतना का प्रमाण देते हैं।

जब हम उनकी ग़ज़लों के उल्लेखनीय शेरों से उनकी रचनाधर्मिता को पहचानने का प्रयास करते हैं तो उनमें उर्दू ग़ज़ल का बांकपन और हिन्दी कविता की यथार्थवादी प्रयोगधर्मिता का अद्‌भुत सम्मेल हमें दिखाई देता है और उनकी यही खूबी उन्हें अन्य हिन्दी ग़ज़लकारों में उल्लेखनीय बनाती है।

उन्होंने इस शेरों में जज्बात, खयालात और रवायात के पुराने दायरों को तोड़कर वो नयी जमीन बनाई है, जो जमीन आज के समय की मांग है। अर्थात जो व्यक्ति अपनी संस्कृति से, अपनी परम्परा से, अपनी जड़ों से जुड़ा होता है,

उसे कोई बहका या भरमा नहीं सकता। सलिल इसी विश्वास को हमें सौंपते हैं। जहाँ तक कथ्य की विविधता का प्रश्न है वह उनके अनुभव और सोच के विस्तार का ही परिचायक है। उनकी ग़ज़लों की विशेषता उनकी सहजता है। दरअसल कहन और भाषा का मुहावरा दो ऐसे बुनियादी तत्व हैं, जिनसे ग़ज़ल असर पैदा करती है और पाठक की स्मृति में अपनी जगह बनाती है।

उपर्युक्त अवलोकन से स्पष्ट है कि कुलदीप सलिल के शेर जीवन और जगत के समकालीन सन्दर्भों को उद्घाटित करते हुए एक नयी दृष्टि प्रस्तुत करते हैं। मुझे उम्मीद है कि उनके शेर ग़ज़ल-प्रेमियों के दिल को प्रभावित करेंगे और हिन्दी ग़ज़ल को समृद्ध करेंगे। इस संग्रह के सुंदर प्रस्तुतीकरण के लिए लिटिल बर्ड पब्लिकेशन की संचालिका डॉ. कुसुमलता सिंह जी को धन्यवाद देता हूँ।

–हरेराम समीप
पता : 395, सेक्टर-8, फरीदाबाद-121006
संपर्क : 09871691313

चुनींदा शे'र और ग़ज़लें–एक बेहतरीन संकलन

अच्छी कविता, गीत, ग़ज़ल की पहचान यह है कि वह सीधे कवि के दिल से निकले और पाठक या श्रोता के दिल तक पहुंचे। यदि बात में जान होगी तो दिल में पहुंची हूई वह बात पाठक या श्रोता के दिलो-दिमाग में छा जायेगी। दरअसल, रोज-रोज नयी बातें होना या कहना इस दुनिया में बहुत कम हैं, इसलिये किसी कविता, गीत, रूबाई या ग़ज़ल में कहने के ढंग के नयेपन, उसकी ताज़गी और कवि की विशिष्ट प्रस्तुति का विशेश महत्व है। विशय कुछ भी हो, कविता या शे'र ढला हुआ होना चाहिये।

वरिश्ठ कवि, शायर और अनुवादक श्री कुलदीप सलिल किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। जब उन्होंने सन् 1966 में दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कालेज में इंगलिश विभाग में प्रवक्ता के पद के लिये साक्षात्कार दिया तो कुछ प्रश्नों के उत्तर देने के अतिरिक्त, उन्होंने शेक्सपीयर की एक प्रसिद्ध कविता का हिंदी अनुवाद सुनाया तो इंटरव्यू बोर्ड के अध्यक्ष, दिल्ली यूनिर्सिटी के तत्कालीन प्रो-वाइस-चांसलर डा. सरूप सिंह इस सुंदर अनुवाद से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने भाव-विभोर होकर कहा, "बस और सवालों की अब जरूरत नहीं, आपका सिलेक्शन हो गया।" आप हिंदी, उर्दू के अलावा अंग्रेजी में भी काव्य-रचना करते हैं और एक अच्छे अनुवादक भी हैं। खुशवंत सिंह जैसे वरिश्ठ पत्रकार ने सलिल जी की कई लघु कवितायें और सामाजिक, राजनीतिक व्यंग तो अपने कालम में प्रकाशित किये, साथ ही उनकी काव्य-प्रतिभा और वैशिश्टय पर हिंदुस्तान टाईम्स में तीन आलेख भी प्रस्तुत किये। इससे सलिल जी को पूरे विश्व में एक अच्छे कवि के तौर पर पहचान भी मिली।

सलिल जी की यह खासियत है कि एक मंजे हुए शब्द-शिल्पी की तरह वह हर शे'र में कोई बात पैदा करना चाहते है, और वह चाहते हैं कि उनके शे'र या कविता व्यक्ति और समाज, जीवन और जगत के किसी अनचीन्हे पहलू को उजागर करे, या कुछ नया न भी कहे तो, बात ऐसे कहें कि नयी-सी लगे–

कहा बात कर तू ऐसी, कहा इस तरह से कर तू,
कि लगे नयी-नयी सी, कोई छोड़े वो असर भी !

मैंने कहीं पढ़ा था कि ग़ज़ल की ख़ास बात यह है कि हर अच्छी ग़ज़ल और उसका हर शे'र दिल-दिमाग़ को छूता हुआ, दो मिस्रों में पूरी बात कहता है। रिवायती ग़ज़ल अकसर हुस्नो-इश्क, शराब, आहो-फुगां और ख़्वाब और ख्वाहिश के रोमानी रंग में डूबी हुई सीधी दिल को छूती है। बिम्ब और प्रतीक भी पुराने और रिवायती होते हैं। यानी, शे'र में जटिलता बहुत कम होती है। परन्तु यथार्थ काफ़ी जटिल है और जीवन-जगत के प्रश्न ख़ासे कठिन। अतः रोमानी कविता की प्रासंगिकता और इसका महत्व सीमित ही है। दूसरी ओर आज की कविता विचार पक्ष पर बल देती हुई, आज की जटिलताओं से जूझती हुई, गद्य के करीब, गद्य ही हो गयी है। इसका शिल्प भी ऐसा होता है कि पाठक को काफ़ी कठिनाई पेश आती है। ऐसी कविता कई बार दुरूह भी हो जाती है और अपनी उपयोगिता खो बैठती है।

अच्छी ग़ज़ल, विशेशकर आज की अच्छी ग़ज़ल वह है जिसमें ग़ज़ल की बुनियादी शर्त, तग़ज़्ज़ुल भी हो और वह आज के यथार्थ को दर्शाये भी, शे'र दिल को भी छुए और दिमाग़ को भी झकझोरे, सोचने पर मजबूर भी करे। हर शे'र में कुछ कहने योग्य होना चाहिये, और बात इस तरह से कही जाये कि पाठक को झकझोर दे या दुलार दे, उसे पढ़कर पाठक को ताज़गी महसूस हो, यथार्थ की कोई नयी परत खुले और एक दिव्य और अलौकिक आनंद की अनुभुति हो, एक मीठे दर्द का आभास हो। गम्भीर से गम्भीर विचार दिल के रास्ते दिमाग़ तक पहुंचे। कविता पाठक को मुक्त भी करे और बांधे भी, यथार्थ की संश्लिश्टता भी हो और शे'र का लुत्फ भी। परन्तु संश्लिश्ट विचार पाठक तक पहुंचना ज़रूर चाहिये। सलिल जी का साहित्य-संसार विशाल है, उसमें एक आकर्शण भी है और एक विशेश ताकत है, जो पाठक को अपनी ओर खींचती है। आपकी शायरी पाठक के विचारों को उद्वेलित करती है। आपकी शायरी जितनी प्रभावशाली है और प्रेरणादायक है, उतना ही उनकी संघर्शभरी जिंदगी का सफर भी है। सलिल जी ने तर्क और भावनाओं की गइराई को अपनी रचनाओं का आधार बनाया और सभी रूढ़िवादी परंपराओं का यथासंभव विरोध किया। आपकी रचनाओं में प्रेम, प्रकृति तो हैं ही, साथ ही आपने अपने काव्य में सामाजिक, राजनीतिक विद्रूपताओं पर भी कलम चलाई है। आपकी कविता, गज़लें और शे'र एक व्यक्ति के जीवन में आई विडम्बनाओं, विसंगतियों को

रेखांकित करते हुए उनके परिमार्जन का मार्ग भी दिखाती है। सीधी-सादी ज़ुबान में गहरी से गहरी बात कहने की सलिल जी की अदा ही उनकी असली ताकत है। दरअसल, सलिल जी की काव्य-रचनाओं की शैली, भाशा और शब्दों की आत्मा से पाठक अभिभूत हो जाता है।

सलिल जी लिखते हैं कि ग़ज़ल का अपना एक व्याकरण है, काफ़िये-रदीफ़ आदि की बंदिश है जिस पर अमल करना होता है। परन्तु अमल करने का मतलब अन्धानुकरण करना नहीं है इस मामले में दुश्यन्त कुमार ने हमारा मार्गदर्शन किया है। उदाहरण के तौर पर वे कहते हैं कि 'शहर' शब्द में 2, 1 के स्थान 1, 2 का वज़न मान लेने में कोई हर्ज नहीं। भाशा और व्याकरण कोई जड़ वस्तुएं नहीं हैं, इवालविंग एन्टटीज (evolving entities) हैं। खुद उर्दू-फारसी वालों ने समय पर परिवर्तन किये हैं। उदाहरण के लिये 'अगर' या दिले नादां में 'दिले' का वज़न 1, 2 ही होना चाहिये लेकिन यह 2, 1 और 1, 1 के वजन में भी इस्तेमाल होता है। मकसद तो यह है कि शे'र की गेयता (musicality) बनी रहे। प्रस्तुत संग्रह और इनसे पहले की ग़ज़लों में भी एक आज़ादी ली गई है। उदाहरण के लिये–

'लाख करिश्मे इश्क अभी तो और हमें दिखलायेगा
दर्दे-दिल है यह आखिर अब जाते-जाते जायेगा''

में 'लाख करिश्मे' के स्थान पर 'कई करिश्में इश्क अभी तो और हमें दिखलायेगा। इससे अनुप्रास और बेहतर अर्थवत्ता की वजह से शे'र की खूबसूरती कुछ बढ़ी ही है। यह एक आज़ादी मैंने कई जगह ली है।

वरिश्ठ शायर, समीक्षक और हमारे प्रिय मित्र हरेराम समीप जी के आग्रह और सुझाव पर हमने इस संग्रह के लिये कुछ गज़लें और शे'रों का चयन किया है, जो समीप जी को काफी पसंद आये, इसके लिये हम दिल से समीप जी के आभारी हैं। इस संग्रह में कुलदीप सलिल की चुनींदा ग़ज़लों और शे'रों को प्रस्तुत करते हुए हमें हर्श हो रहा है। आशा है पाठकों को यह चयनित ग़ज़लें और शे'र अवश्य पसंद आयेंगे।

–ओम सपरा
98181-80932
पूर्व स्पैशल मैट्रोपोलिटन मैजिस्ट्रेट, साहित्य संपादक, अध्यात्म पत्र-पत्रिका,
महासचिव, मित्र संगम पत्रिका, गुप्ता कालोनी, नई दिल्ली